राह हो रोशन जिधर से वह गुजरे , हमें जलाने वाला आज सफर पर है

शब्दों को इंसानी रूह की धड़कन बना दिया बशीर साहब ने

डॉ. बशीर बद्र केवल एक शायर का नाम नहीं है, बल्कि उस अहसास का नाम है जो इंसान को भीड़ में भी खुद से मिला देता है। 15 फरवरी 1935 को अयोध्या में जन्मे बशीर बद्र ने अपनी पूरी जिंदगी शायरी की सादगी और उसकी गहराई को समर्पित कर दी। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण करने के बाद, उन्होंने मेरठ कॉलेज के उर्दू विभाग में अपनी बौद्धिक उपस्थिति दर्ज कराई। उन्होंने साहित्य के फलसफे को किताबों से निकालकर मुशायरों के मंचों और आम आदमी के ड्राइंग रूम तक पहुँचाने का जो काम किया, उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है।

बशीर साहब का व्यक्तित्व उनकी शायरी की तरह ही बहुत कोमल लेकिन बेहद प्रभावशाली था। उनकी शायरी की सबसे बड़ी खूबसूरती यह थी कि उन्होंने फारसी के कठिन मुहावरों के बजाय बोलचाल की हिंदी और उर्दू का ऐसा संगम तैयार किया जो सीधे दिल को छू लेता था। उन्होंने कहा था कि

'चराग़ों को आँखों में
महफ़ूज़ रखना,
बड़ी दूर तक रात
ही रात होगी।
मुसाफ़िर हैं हम भी,
मुसाफ़िर हो तुम भी,
किसी मोड़ पर फिर
मुलाक़ात होगी।

यह शेर उनकी पूरी जिंदगी का सार है। वे जानते थे कि जिंदगी का सफर लंबा है और इसमें अंधेरे भी आएंगे, लेकिन अपनी उम्मीदों के चरागों को बचाकर रखना ही इंसानियत है। उनकी यह फकीरी और उम्मीद की किरण ही उन्हें अन्य शायरों से अलग करती थी। वे दुनिया को एक ऐसा मुसाफिरखाना मानते थे जहाँ हर मुलाकात एक नया सबक सिखाती है।

उनके जीवन का सबसे कठिन दौर 1987 के मेरठ दंगे थे, जब उनका घर जल गया और उनकी बेशकीमती रचनाएं राख में बदल गईं। उस हादसे ने उनके भीतर एक गहरा सन्नाटा पैदा किया, जिसे उन्होंने अपनी गजलों में एक दार्शनिक ऊंचाई दी। उन्होंने लिखा था-

'उजाले अपनी यादों
के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में
जिंदगी की शाम हो जाए। '

यह शेर आज के समय में और भी मौजूं लगता है। उन्होंने तबाही के मंजर को जिस तरह खूबसूरती से लफ्जों में पिरोया, वह किसी महान फनकार के ही वश की बात थी। उनके कलाम में कभी नफरत की बू नहीं आई, बल्कि उन्होंने हमेशा अमन, मोहब्बत और भाईचारे का पैगाम दिया। वे अक्सर कहा करते थे-

दुश्मनी जम कर करो
लेकिन ये गुंजाइश रहे,
जब कभी हम दोस्त
हो जाएं तो शर्मिंदा न हों।

उनके साहित्यिक योगदान को देश ने बहुत सम्मान दिया। 1999 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। इसके अलावा साहित्य अकादमी पुरस्कार और देश की अनेक उर्दू अकादमियों के सर्वोच्च सम्मान उनकी झोली में रहे। उन्होंने 'इकाई', 'आमद', 'आस', 'आसमान' और 'आहट' जैसी कालजयी कृतियां दीं। उनकी आलोचनात्मक दृष्टि 'आज़ादी के बाद उर्दू ग़ज़ल' के अध्ययन में आज भी मील का पत्थर मानी जाती है। उनकी शायरी में समाज की विसंगतियों पर गहरा प्रहार भी था, जैसे उन्होंने लिखा-

'लोग टूट जाते हैं
एक मकां बनाने में,
तुम तरस नहीं खाते
बस्तियां जलाने में।

यह शेर सत्ता और समाज के क्रूर चेहरों को बेनकाब करने के लिए काफी था।

बशीर साहब का व्यक्तित्व एक दरिया की तरह था, जो शांत दिखता था लेकिन भीतर गहराई बहुत थी। उन्हें न शोहरत का गुरूर था और न ही सत्ता का लोभ। वे मंच पर आते थे तो अपनी धीमी लेकिन असरदार आवाज से पूरे माहौल को मोह लेते थे। वे नई पीढ़ी के शायरों के लिए एक मार्गदर्शक थे। उन्होंने सिखाया कि कैसे कम शब्दों में बड़ी बात कही जाती है। उनका जाना उर्दू अदब का वह चिराग बुझ जाने जैसा है, जिसकी रोशनी से आने वाली कई पीढ़ियां रास्ता तलाशा करेंगी। उन्होंने अपनी शायरी के जरिए खुद को अमर कर लिया है। वे केवल शायर नहीं, बल्कि उर्दू और हिंदी को जोड़ने वाले एक सेतु थे। उन्होंने हमेशा माना कि भाषा का कोई मजहब नहीं होता, वह केवल संवेदनाओं की वाहक होती है।

उनके व्यक्तित्व का एक और पहलू यह था कि वे बहुत ही जमीन से जुड़े इंसान थे। तमाम उपलब्धियों के बाद भी उन्होंने कभी अपनी सादगी नहीं खोई। वे अक्सर अपने घर की दहलीज पर बैठकर घंटों तक अपनी यादों को समेटा करते थे। उनकी याददाश्त के कम होने की खबरें जब आईं, तो उनके चाहने वालों का दिल दहल गया था। उन्हें यह दुख था कि अब वे अपनी ही पुरानी ग़ज़लों को शायद ही याद कर पाएं, लेकिन नियति का खेल देखिए, उनकी शायरी तो हर उस इंसान की जुबान पर थी जिसे जिंदगी में कभी न कभी मोहब्बत या जुदाई का सामना करना पड़ा। वे एक ऐसे दरिया थे जो अपनी मौज में बहते हुए हर सूखे चेहरे पर नमी और मुस्कान बिखेरते थे।

उर्दू अदब और शायरी की दुनिया में डॉ. बशीर बद्र एक ऐसा नाम है, जिन्होंने शब्दों को केवल कागज पर नहीं उतारा, बल्कि उन्हें इंसानी रूह की धड़कन बना दिया। 28 मई 2026 को उनका भोपाल में निधन होना साहित्य जगत के लिए एक युग का अवसान है। आज जब बशीर बद्र साहब हमारे बीच नहीं हैं, तो ऐसा लगता है कि उर्दू जुबान थोड़ी और खामोश हो गई है। उनके द्वारा कहे गए शब्द अब हमारे लिए सबसे बड़ी विरासत हैं। उन्होंने हमें सिखाया कि जिंदगी की मुश्किलों के बावजूद कैसे चेहरे पर मुस्कान बनाए रखी जाती है। वे कहते थे-

'हम भी दरिया हैं हमें
अपना हुनर मालूम है,
जिस तरफ भी चल
पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा। '

आज वे एक ऐसे सफर पर निकल पड़े हैं जहाँ से कोई लौटकर नहीं आता, लेकिन उनका हुनर, उनकी सादगी और उनके शेर हमेशा हमारे साथ रहेंगे। बशीर साहब आप हमेशा हमारी यादों में, हमारे स्टेटस में और हमारी बातचीत में जिंदा रहेंगे। आपकी शायरी का उजाला कभी मद्धम नहीं होगा। अलविदा बशीर साहब, आप हिन्दुस्तान की फिजाओं में हमेशा महकते रहेंगे। आपकी विरासत उन तमाम लोगों के लिए एक मशाल है जो आज भी अंधेरी रातों में उम्मीद का चराग जलाए रखना चाहते हैं। आप अमर हैं, क्योंकि आपकी शायरी में पूरी कायनात बसती है।

▶ संदीप सृजन
संपादक- शाश्वत सृजन
ए-99 वी.डी़ मार्केट,
उज्जैन 456006

जादू, टोना, डर और अज्ञानता का कॉरपोरेट व्यापार

केवल हमारी कमज़ोरी पर फ़लता-फ़ूलता है

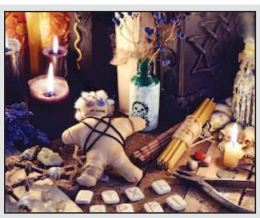

इतिहास, संस्कृति और मानवीय मूल्यों के मामले में हमारा समाज जितना प्राचीन और समृद्ध रहा है, दुर्भाग्य से यहाँ अंधविश्वास, जादू-टोने और ढोंग की जड़ें भी उतनी ही गहरी हैं। यह एक ऐसी भयानक सामाजिक और मानसिक त्रासदी है, जिसकी बलि चढ़कर लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपना मानसिक सुकून, आपसी रिश्ते और जीवन भर की गाढ़ी कमाई एक अंधे कुएँ में झोंक देते हैं। आज के इस आधुनिक दौर में, जहाँ विज्ञान और तकनीक हर रोज़ नए आयाम स्थापित कर रहे हैं, एक बड़ा और अनुत्तरित सवाल हमारे सामने खड़ा है कि एक पढ़ा-लिखा और सभ्य समाज भी किसी कथित 'बाबा ', 'तांत्रिक' या 'ओझा' के कदमों में अपनी इज्जत, विवेक और दौलत क्यों ढेर कर देता है?

यदि हम इस गोरखधंधे की ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि को देखें, तो समझ आता है कि सदियों से चली आ रही कुछ अज्ञानतापूर्ण रूढ़ियाँ और कुरीतियाँ अनजाने में हमारे अवचेतन मन का हिस्सा बन गई हैं। हमारे लोक-किस्सों, दंतकथाओं और काल्पनिक कहानियों में अलौकिक शक्तियों, अदृश्य बाधाओं और जादूगरों का ज़िक्र इस प्रचुरता के साथ किया गया कि एक आम इंसान हकीकत और वहम (भ्रम) के बीच का महीन अंतर ही भूल गया। यह मानसिक कमज़ोरी पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही और आज एक गंभीर सामाजिक बीमारी का रूप ले चुकी है।

लोगों के इस दलदल में फंसने और सब कुछ लुटा देने के पीछे सबसे बड़ी वजह समाज में व्याप्त घोर मजबूरी, निराशा और डर है। जब एक इंसान जीवन की कड़वी सच्चाइयों और अप्रत्याशित चुनौतियों से घबरा जाता है—चाहे वह संतान का न होना हो, घरेलू या पारिवारिक कलह हो, विवाह में आ रही लगातार रुकावटें हों, या फ़िर वर्षों की बेरोजगारी और अचानक आया आर्थिक संकट हो,तो वह किसी भी चमत्कारी और तात्कालिक सहारे की तलाश में अंधा हो जाता है। रही-सही कसर 'किसी ने कुछ कर दिया है' या 'व्यापार पर बंधन लगा दिया है' का काल्पनिक ख़ौफ़ पूरी कर देता है। अपनों का अविश्वास और विरोधियों का यही डर लोगों को हर वक्त वहम में रखता है, और इसी मानवीय डर का सीधा फ़ायदा ये ढोंगी और पाखंडी बाबा उठाते हैं।

हमारे समाज की एक और सबसे बड़ी कमज़ोरी यह है कि यहाँ मेहनत, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और धैर्य के बजाय रातों-रात चमत्कार देखने और 'शॉर्टकट' से सब कुछ हासिल करने की तीव्र लालसा पाई जाती है। यही शॉर्टकट की चाहत इंसान को इन लुटेरों के दरवाज़ों तक खींच ले जाती है। खुद को दैवीय या चमत्कारी शक्तियों का स्वामी बताने वाले ये ठग दरअसल मनोविज्ञान के शातिर उस्ताद होते हैं। इनका काम करने का तरीक़ा बेहद संगठित और सुनियोजित होता है। ये पीड़ित को देखते ही उसके चेहरे के हाव-भाव, उसकी घबराहट या उसकी सामान्य बातों से उसकी कमजोरी और परेशानी भांप लेते हैं। इनका पहला और अचूक वाक्य अक्सर यही होता है, 'तुम्हारे किसी करीबी या बहुत प्रिय रिश्तेदार ने तुम पर कुछ करा दिया है। 'यह एक ऐसा तीर है, जो लगभग हर घर की कहानी पर सटीक बैठ जाता है और पीड़ित तुरंत उनके वश में आ जाता है।

इसके बाद शुरू होता है डर का असली और घिनौना व्यापार। कथित संकट के निवारण और समाधान के नाम पर दुर्लभ, अजीबोगरीब और अमानवीय चीजों की मांग की जाती है, जैसे किसी विशेष बेजुबान जानवर की बलि, श्मशान की मिट्टी, अजीब सूखी हड्डियां, या अत्यंत महंगे अनुष्ठान और ताबीज़। जब एक बार इंसान इनके चंगुल में आर्थिक और मानसिक रूप से फंस जाता है, तो उसे और अधिक डराया जाता है कि 'यदि अब यह प्रक्रिया बीच में रोक दी, तो तुम्हारा सर्वनाश हो जाएगा या परिवार में किसी की असमय मौत हो जाएगी।' इस ख़ौफ़ के मारे लोग अपने जीवन भर की जमापूंजी, गहने, गाड़ियां और यहाँ तक कि पुश्तैनी जमीनें तक बेचकर इन ठगों की तिजोरियां भरते रहते हैं।

इस अंधविश्वास के सामाजिक और पारिवारिक दुष्परिणाम इतने डरावने और आत्मघाती हैं कि उनका आकलन केवल पैसों से नहीं किया जा सकता। एक छोटे से वहम के कारण सगे भाई-बहन, माता-पिता और हंसते-खेलते परिवार एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं, क्योंकि किसी ढोंगी ने चंद पैसों के लिए उनके मन में अविश्वास और नफ़रत का बीज बो दिया होता है। इतना ही नहीं, इन अज्ञानी और चरित्रहीन ढोंगियों के आश्रमों और ठिकानों पर मासूम महिलाओं का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण होना एक आम बात बन चुकी है। हद तो तब हो जाती है जब 'असर' या 'साया' हटाने के नाम पर मासूम और बीमार लोगों को खंभों से बांधकर बेरहमी से पीटा जाता है, गर्म सलाखों से दागा जाता है या जहरीली चीजें खिलाई जाती हैं, जिसके कारण अब तक अनगिनत मासूम लोग तड़प-तड़प कर अपनी जान गंवा चुके हैं।

इस गहरे अंधकार और दलदल से बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता शिक्षा, तार्किक सोच और आत्मबल है। जब इंसान का यह विश्वास अडिग हो जाए कि जीवन के उतार-चढ़ाव प्रकृति के सार्वभौमिक नियमों, हमारी अपनी मेहनत, सूझबूझ और परिस्थितियों के अधीन हैं, और दुनिया का कोई भी तीसरा व्यक्ति बैठकर किसी का भाग्य नहीं बदल सकता, तब सारे वहम खुद-ब-खुद दम तोड़ देते हैं। चमत्कार और जादू-टोने के नाम पर चलने वाला यह पूरा तमाशा दरअसल 'डर और अज्ञानता का कॉरपोरेट व्यापार' है, जो केवल हमारी कमज़ोरी पर फ़लता-फ़ूलता है।

समय आ गया है कि हम जागें। जब तक हमारे समाज में वैज्ञानिक चेतना और व्यावहारिक समझ जागृत नहीं होगी, जब तक हम शारीरिक या मानसिक बीमारियों के इलाज के लिए इन ढोंगियों के पास भटकने के बजाय योग्य डॉक्टरों और मनोचिकित्सकों की मदद नहीं लेंगे, तब तक ये लुटेरे इसी तरह हमारी मजबूरियों का सौदा करते रहेंगे। आइए, अपनी सोच को बदलें, अंधविश्वास के इस जाल को तर्क और विवेक की कसौटी पर परखें और एक जागरूक, स्वस्थ और प्रगतिशील समाज के निर्माण में अपना योगदान दें। यही समय की सबसे बड़ी पुकार है।

▶ डॉ. मुश्ताक अहमद शाह 'सहज'
(हरदा, मध्य प्रदेश)

सुविचारः

अपने संस्कार खोकर उत्तर मत दें

यदि कोई तुम्हें मानसिक कष्ट दे...
या तुम्हारा अपमान करे...
तो अपने संस्कार खोकर उत्तर मत दो...।
जो तुम्हें दुख दे रहा है...
वह अपने कर्मों का फल स्वयं भोगेगा...
तुम अपना मन शांत रखो...
और उसे क्षमा कर आगे बढ़ जाओ...
तुम्हारी शांति ही उसकी सबसे बड़ी हार है...।।
गर्ग! रावत... आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो।

(गुरू) सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज)
श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास
राजबेरा, राजस्थान

एक अजनबी से आत्मा का रिश्ता

एक अजनबी कब जीवन बन गया पता ही नहीं चला। 30 मई 1990 को जो अजनबी मेरे जीवन में आया था, आज वही मेरे अस्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। और शायद यही सच्चे विवाह की सबसे खूबसूरत पहचान है।30 मई 1990... यह सिर्फ एक तारीख नहीं थी, बल्कि मेरे जीवन का वह दिन था जब एक अजनबी के साथ मेरा जीवन जुड़ गया था। उस समय ना एक-दूसरे की आदतों का पता था, ना स्वभाव का। बस एक रिश्ता था, जिसे परिवार और संस्कारों ने जोड़ दिया था। लेकिन धीरे-धीरे वही अजनबी कब मेरी सांसों में बस गया, कब मेरी दुनिया बन गया, यह मुझे खुद भी पता नहीं चला।मेरे पति ने मुझे रूप से नहीं, मेरे मन से प्रेम किया।

आज हमारी शादी की सालगिरह है। इतने वर्षों के साथ में मैंने यह समझा है कि सच्चा प्रेम दिखावे में नहीं होता, बल्कि एक-दूसरे की आत्मा में बस जाने का नाम प्रेम है। हम दोनों ने कभी सार्वजनिक रूप से अपने प्रेम का प्रदर्शन नहीं किया, ना ही दुनिया को दिखाने के लिए बड़े-बड़े शब्द बोले। लेकिन मेरे पति ने मुझे जो सम्मान दिया, जो अपनापन दिया, वही मेरे लिए संसार का सबसे बड़ा प्रेम है।

आज के समय में प्रेम की परिभाषा बदलती जा रही है। लोग समझते हैं कि यदि पति अपनी पत्नी से प्रेम करता है तो उसे अपने माता-पिता, भाई-बहनों से दूरी बना लेनी चाहिए। पत्नी की हर बात मानना, चाहे वह सही हो या गलत, यही प्रेम का प्रमाण माना जाने लगा है। कई बार तो पुरुष अपनी पत्नी के सामने अपने ही जन्म देने वाले माता-पिता से लड़ पड़ता है। समाज इसे 'पत्नी का सच्चा प्रेम' कहता है।

लेकिन मेरे लिए प्रेम की परिभाषा बिल्कुल अलग है-मेरे पति ने कभी अपने माता-पिता का अपमान नहीं किया। उन्होंने कभी ऊंची आवाज़ में जवाब तक नहीं दिया। यही कारण है कि मेरे मन में उनके लिए असीम सम्मान है। मैं अपने पति की पूजा इसलिए करती हूं क्योंकि उन्होंने रिश्तों की मर्यादा निभाई है। उन्होंने मुझे प्रेम दिया, लेकिन उस प्रेम के लिए अपने संस्कारों को नहीं छोड़ा।

मुझे लगता है कि जो व्यक्ति अपने माता-पिता का सम्मान नहीं कर सकता, वह किसी का सच्चा नहीं हो सकता। जो पुरुष केवल पत्नी को खुश करने के लिए अपने माता-पिता को भूल जाए, उनकी सुध ना ले, उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाए – वह गुलाम तो हो सकता है, लेकिन चरित्रवान इंसान नहीं।

सच्चा पुरुष वही है जो सभी रिश्तों को साथ लेकर चले-मेरे पति ने मुझे कभी मेरे रूप से नहीं आंका। मैं ना तो बहुत सुंदर हूं, ना ही पिछले 23 वर्षों से मैं ठीक तरह से चल पाती हूं। मेरे जीवन में शारीरिक कठिनाइयाँ रही हैं। कई बार मुझे लगा कि शायद मैं अपने पति के जीवन का बोझ बन जाऊंगी। लेकिन उन्होंने कभी मुझे ऐसा महसूस नहीं होने दिया।

उन्होंने मेरे चेहरे की सुंदरता नहीं देखी, उन्होंने मेरे मन को देखा। मेरे व्यवहार को देखा। मेरे संस्कारों को देखा। उन्हें मेरा दिल सुंदर लगा। आज के समय में जहां लोग थोड़ी सी परेशानी आने पर रिश्ते तोड़ देते हैं, वहां मेरे पति हर परिस्थिति में मेरे साथ खड़े रहे। उन्होंने कभी मेरे दर्द को मेरा अकेला दर्द नहीं रहने दिया। हमारे रिश्ते की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि दर्द एक को होता है, तो तकलीफ दूसरे को भी होती है।

यही तो आत्माओं का मिलन होता है-पति-पत्नी का रिश्ता केवल शरीर का रिश्ता नहीं होता। यह दो आत्माओं का संगम होता है। जहां बिना कहे मन की बात समझ में आने लगे, जहां खामोशी भी संवाद बन जाए, जहां एक की आंखों का दर्द दूसरा पढ़ ले – वहीं सच्चा विवाह होता है।

मेरे पति बिना मेरे कहे मेरे मन की हर बात जान लेते हैं। मुझे क्या चाहिए, क्या तकलीफ है, कब मैं उदास हूं – यह सब उन्हें बिना बोले समझ आ जाता है। शायद यही प्रेम की सबसे ऊंची अवस्था होती है। आजकल लोग प्रेम को केवल आकर्षण समझ लेते हैं। सुंदरता, पैसा, दिखावा – इन्हीं को रिश्तों का आधार बना लिया गया है। लेकिन समय के साथ सुंदरता ढल जाती है, शरीर कमजोर हो जाता है, जवानी खत्म हो जाती है। यदि रिश्ता केवल बाहरी आकर्षण पर टिका हो, तो वह ज्यादा समय तक नहीं टिकता।

सच्चा प्रेम वह होता है जो समय के साथ और गहरा हो जाए-मेरे पति ने मुझे हर खुशी देने की कोशिश की। उन्होंने मुझे कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि मैं किसी बात में अधूरी हूं। जबकि सच तो यह है कि उन्होंने मेरे लिए जितना किया, शायद मैं कभी उसका ऋण नहीं चुका सकती।

आज हमारी शादी को इतने वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन मेरे मन में उनके लिए सम्मान हर दिन बढ़ता ही गया है। क्योंकि प्रेम केवल 'आई लव यू' कह देने से नहीं होता। प्रेम त्याग में दिखता है, जिम्मेदारी निभाने में दिखता है, रिश्तों की मर्यादा बनाए रखने में दिखता है। एक अच्छा पति वही नहीं होता जो पत्नी की हर गलत बात में उसका साथ दे। बल्कि अच्छा पति वह होता है जो पत्नी को सही और गलत का अंतर समझाए, जो उसे परिवार जोड़ना सिखाए, जो अपने माता-पिता और पत्नी – दोनों के प्रति न्याय करे।

और एक अच्छी पत्नी वही होती है जो पति को उसके परिवार से दूर करने की जगह उसके रिश्तों को मजबूत बनाए। मैं गर्व से कह सकती हूं कि मेरे पति ने मुझे केवल पत्नी का स्थान नहीं दिया, बल्कि सम्मान दिया, सुरक्षा दी, आत्मसम्मान दिया। उन्होंने मुझे यह एहसास कराया कि प्रेम शरीर से नहीं, आत्मा से किया जाता है। आज हमारी सालगिरह पर मैं ईश्वर का धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने मुझे ऐसा जीवनसाथी दिया। शायद हर स्त्री को ऐसा पति नहीं मिलता जो उसकी कमियों से ज्यादा उसकी अच्छाइयों को देखे।

सच्चा प्रेम रिश्ते तोड़ता नहीं, जोड़ता है-मैंने जीवन में यही सीखा है कि जिस पुरुष के दिल में अपने माता-पिता के लिए प्रेम होता है, वही पुरुष अपनी पत्नी से भी सच्चा प्रेम कर सकता है। क्योंकि प्रेम करने वाला इंसान कभी रिश्ते तोड़ना नहीं जानता, वह केवल रिश्ते निभाना जानता है। आज की पीढ़ी को समझना होगा कि विवाह कोई युद्ध नहीं है, जहां पत्नी जीत जाए और माता-पिता हार जाएं। विवाह तो वह बंधन है जहां सभी रिश्तों को साथ लेकर चलना पड़ता है।

रिश्ते तोड़कर पाया गया प्रेम कभी सुख नहीं देता-लेकिन रिश्तों को जोड़कर निभाया गया प्रेम जीवन को स्वर्ग बना देता है।पति वही जो पत्नी से भी प्रेम करे और माता-पिता का सम्मान भी। मेरे लिए मेरे पति केवल जीवनसाथी नहीं, बल्कि मेरे आत्मसम्मान, मेरे विश्वास और मेरे जीवन का सबसे सुंदर सत्य हैं।

▶ ऊषा शुक्ला
इफको आंवला बरेली यूपी